~~Script~~ लिपि

भाषा को जिन प्रतीक, चिह्नों द्वारा दर्शाया जाता है, लिपि कहलाता है। यह भाषा ज्ञान को संरक्षित करने का एक साधन है। सीखे हुए ज्ञान को लिपि द्वारा ही सुरक्षित रूप दिया जाता है। लिपि के बिना भाषा साहित्य का कोई स्वरूप संभव नहीं है। मौखिक अभिव्यक्ति का स्वरूप कुछ क्षण तक ही वातावरण में विद्यमान रहता है, इसके बाद यह नष्ट हो जाता है। अतः, भाषा के स्वरूप को स्थायित्व प्रदान करने के लिए लिपि एक साधन है। यह मानव के विचारों, भावों, संस्कृति के विकास में स्थायित्व प्रदान करती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि व्यक्ति द्वारा सीखे हुए ज्ञान को सुरक्षित, संरक्षित तथा प्रसारित करने के लिए लिपि आवश्यक है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है—

अक्षरानाम् अकारो अस्ति।

यजुर्वेद में भी अक्षर शब्द का प्रयोग किया गया है —

"अक्षराणां एवं अध्यक्ष जानती गात।"

यजु. 33/57

प्रत्येक ध्वनि को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने के लिए जो चिह्न या प्रतीक उपयोग में लाया जाता है, उसे वर्ण कहा जाता है। इन वर्णों को जिस रूप में लिखा जाता है, उसे लिपि कहा जाता है।

अशोक के शासनकाल में ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक और अरमाइक लिपि में अभिलेख लिखे जाते थे।

खरोष्ठी लिपि के वर्ण अनगढ़, बेडौल, और

टेढ़े-मेढ़े अर्थात गधे के होंठ की भाँति होते थे। खरोष्ठी शब्द का अर्थ ही है "गधे के होंठ"। विद्वानों का मानना है कि इसलिए उस लिपि का नाम खरोष्ठी पड़ा।
ईरानियों की प्राचीन राजकीय लिपि 'अरमाइक' है तथा उसी से खरोष्ठी की उत्पत्ति हुई।

ब्राह्मी लिपि -

ब्राह्मी लिपि भारत की सबसे प्राचीन लिपि है। डॉ॰ राजबली पाण्डेय के अनुसार "वेद-ज्ञान की रक्षा के लिए जिस लिपि का निर्माण किया गया उसे ब्राह्म लिपि कहा जाता है। चीनी विश्वकोष 'फा-वान-शु-लिन' के अनुसार इस लिपि के निर्माता आचार्य ब्रह्मा थे।
ब्राह्मी लिपि को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है -
(1) उत्तरी लिपि (2) दक्षिणी लिपि तथा (3) पाली

1. उत्तरी लिपि -

इस लिपि से देवनागरी लिपि विकसित हुई।

2. दक्षिणी लिपि - इसके अंतर्गत तमिल, तेलुगु तथा कन्नड़ की लिपियाँ आती है।

3. पाली लिपि -

इस लिपि से सिंगली और जावा लिपि विकसित हुई।

देवनागरी लिपि के नामकरण के संबंध में प्रचलित कुछ कथाएं -
देवनागरी लिपि नगरों में प्रचलित होने के कारण इस नाम से विख्यात हुआ।
देवमूर्तियों के सांकेतिक त्रिकोण या चक्र आदि चिह्नों को देवनगर कहते थे। इसके मध्य

में लिखे जाने के कारण इन अक्षरों को देवनागरी कहा गया।

देवनागरी लिपि अक्षरात्मक लिपि है। इसमें स्वर, व्यंजन, संयुक्त वर्ण तथा संयुक्ताक्षर है। इस लिपि को सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है, क्योंकि इस लिपि में जो लिखा जाता है, उसका उच्चारण वही किया जाता है। एक चिह्न से एक ही ध्वनि का बोध होता है। यह लिपि सुपाठ्य है। इसकी अभिव्यक्ति स्पष्ट है। देवनागरी लिपि में समग्र ध्वनियों की पूर्ण अभिव्यक्ति होती है।

इस लिपि के एक विशेष गुण यह है कि प्रत्येक ध्वनि के लिए पृथक चिह्न है। इसमें वर्णों का आधार सुन्दर, सरल और सुडौल है। अतः इसे लिखने में काठिनाई नहीं होती है।

देवनागरी लिपि की कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित है-

1. ध्वनि और लिपि में एकरूपता
2. लेखनी में एकरूपता
3. समग्र ध्वनियों की अभिव्यक्ति संभव है।
4. प्रत्येक ध्वनि के लिए पृथक चिह्न का होना।
5. लिपि सुपाठ्य होना
6. सौंदर्य लिपि
7. टंकन और छपाई आसानी से होना
8. आशुलेखन सरल होना

इस लिपि के विषय में यह प्रमाणित हो चुका है कि यह एक भारतीय लिपि है। इसके अवशेष मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा से प्राप्त सिलों से मिले हैं। इन सिलों पर अंकित कुछ चिह्न चित्रात्मक और कुछ अक्षरात्मक हैं।

Scanned with CamScanner

प्राचीन नागरी को देवनागरी का प्रारम्भिक रूप माना जाता है, इसका उद्गम समय 7वीं सदी माना जाता है। मूलतः इसका प्रचलन क्षेत्र उत्तरी भारत रहा।
देवनागरी लिपि पूर्णतः वैज्ञानिक प्रमाणिकता पर खड़ी उतरती है। हिन्दी भाषा इसी लिपि में लेखी जाती है और इस दृष्टि से यह एक समृद्ध मानी जाती है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने सन 1966 में देवनागरी का मानकीकरण किया। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी घोषित की गई।

Scanned with CamScanner